CHAPTER 48

SANSKRIT

Doctoral Theses

01. अजीत कुमार
आचार्य विश्वेश्वरकृत व्याकरणसिद्धान्तसुधानिधि के तद्धिताधिकार का समीक्षात्मक अध्ययन।
निर्देशक : डॉ. श्रीवत्स
Th 24110

विषय सूची

1. व्याकरण अध्ययन की परम्परा 2. प्रत्ययमीमांसा : स्वार्थिक, अस्वार्थिक एवं अत्यन्तस्वार्थिक तद्धित प्रत्यय 3. समीक्ष्यग्रन्थ के आलोक में अष्टाध्यायी चतुर्थाध्याय के तद्धित प्रत्यय 4. अष्टाध्यायी पंचाध्याय के तद्धितप्रत्यय और व्याकरणसिद्धान्तसुधानिधि। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

02. आनन्द
वाक्यपदीप की अम्बाकर्त्री टीका का समीक्षात्मक अध्ययन : वृत्ति समुद्देश के सन्दर्भ मे।
निर्देशक : डॉ. श्रीवत्स
Th 24107

सारांश
(असत्यापित)

क्यपदीय महाभाष्य के पश्चात सर्वसम्मत प्रमाणभूत ग्रन्थ है। महाभाष्य के समान ही इस ग्रन्थ के प्रति भी आदर का भाव निहित है। भतृहरि ने वाक्यपदीय में व्याकरण के दार्शनिक सिद्धान्तों का विश्लेषण तीन काण्डों में किया है।वाक्यपदीय पर स्वयं भतृहरि 'स्वोपज्ञवृत्ति' नामक टीका की रचना की थी, जो अपूर्ण है। ऐसे ही तीनों काण्डों पर भिन्न-भिन्न टीकाकारों की टीकाएँ प्राप्त हैं, अम्बाकर्त्री टीका ग्रन्थ ही मेरे शोध का विषय- 'वाक्यपदीय की अम्बाकर्त्री टीका का समीक्षात्मक अध्ययन' (वृत्ति समुद्देश के सन्दर्भ में) है। शोध विषय निम्न तथ्यों का विश्लेषित करता है- प्रथम अध्याय में टीकाकार पं. रघुनाथ शर्मा का जीवन परिचय, अध्ययन-अध्यापन कृतियाँ, आदि को दिया गया है।वाक्यपदीय के अन्य टीकाकारों का परिचय, एवं वाक्यपदीय से सम्बन्धित शोधग्रंथों का भी परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय के अन्तर्गत वृत्ति का स्वरूप परिभाषा आदि को टीकाकार के अनुरूप विवेचित किया गया है। वृत्ति में अभेदैकत्व संख्या का विश्लेषण किया गया है। इसी अध्याय में लिंग विमर्श नामक शीर्षक से टीकाकार के मतों की समीक्षा की गयी है।समासवृत्ति नामक तृतीय अध्याय में वाक्यपदीय के अनुसार टीकाकार ने कुछ समासों के भेदों का प्रतिपादन किया गया है। इनमें मुख्य रूप से

द्वन्द्व- एकशेष बहुब्रीहिएवं न´्तत्पुरुष के भेदों का भी विवेचन किया गा है। इसी के अन्तर्गत उपमान समास में सादृश्य धर्मों को टीकाकार अनुसार विश्लेषित किया गया है।चतुर्थ अध्याय में कुछ तद्धित प्रत्ययों का विवेचन किया गया है। कुत्सार्थक 'कन्' प्रत्यय, तृतीया समर्थ क्रिया की तुल्यता में 'वति प्रत्यय एवं षष्ठ्यन्त एवं सप्तम्यन्त से भी 'इव' के अर्थ में 'वति' प्रत्यय का विवेचन किया गया है।इस प्रकार सम्पूर्ण अध्यायों में पं. रघुनाथ शर्मा द्वारा अनुमोदित वृत्ति के सभी पक्षों को विवेचित किया गया है।

विषय सूची

1. अम्बाकर्त्री टीकाकार पण्डित रघुनाथ शर्मा का जीवन परिचय 2. वृत्ति-विमर्श 3. समासवृत्ति विमर्श 4. तद्धितवृत्ति-विमर्श ।उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

03. आर्य (विजेन्द्र कुमार)
व्याकरण सिद्धान्तसुधानिधि के अंगाधिकार का समीक्षात्मक अध्ययन ।
निर्देशिका : डॉ. सन्ध्या राठौर
Th 24318

सारांश
(असत्यापित)

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध विश्वेश्वरसूरि द्वारा रचित व्याकरणसिद्धान्तसुधानिधि के अङ्गाधिकार को आधार बनाकर लिखा गया है। यह शोध-प्रबन्ध छः भागों में विभाजित है। इन छः भागों में प्रथम भाग 'भूमिका' में आचार्य विश्वेश्वरसूरि के व्यक्तित्व तथा कर्तृत्व बताया गया है। इसके अतिरिक्त इसी 'भूमिका' भाग में व्याकरणसिद्धान्तसुधानिधि के स्वरूप को बताया गया है। शोध-प्रबन्ध का द्वितीय भाग 'प्रथम अध्याय' है। इसमें व्याकरणसिद्धान्तसुधानिधि के अङ्गाधिकार के स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है तथा इसमें 'अङ्गस्य' सूत्र का अधिकार कहाँ तक है इस विषय पर सूत्रोल्लेख करते हुए अङ्गगाधिकार विषयक विवेचना भी की गई है साथ ही अङ्गाधिकार के प्रयोजन और उसका महत्व भी बताया गया है। शोध प्रबन्ध का तृतीय भाग 'द्वितीय अध्याय' है। इसमें प्रातिपदिक से सम्बद्ध अङ्ग कार्यों का विवेचन है। इस अध्याय में आगम, आदेश, लोप, प्रकृतिभाव, निपातन ,सम्प्रसारण से सम्बद्ध अङ्ग कार्य जो पाणिनि ने बताए हैं उनका विवेचन किया गया है। 'तृतीय अध्याय' शोध प्रबन्ध का चतुर्थ भाग है। इसमें धातु से सम्बद्ध अङ्ग कार्यों का विवरण दिया गया है। इस अध्याय में धातु का स्वरूप धातु से सम्बद्ध आगम, आदेश, लोप, अभ्यास विषयक कार्य, उपधा से सम्बन्धित अङ्ग कार्य तथा आभीय कार्य आदि अङ्गकार्यों विवेचन किया गया है। शोध प्रबन्ध का पंचम भाग 'चतुर्थ अध्याय' हैं। इसमें 'इट् 'के स्वरूप का प्रतिपादन करते हुए अङ्गाधिकार में 'इट्' से सम्बद्ध अर्थात 'इट्' नित्यरूप में, 'इट्' विकल्प रूप में, 'इट्' निषेध रूप में 'इट्' का विधान करने वाले सूत्रों को बताया गया है। शोध प्रबन्ध का छठा भाग उपसंहार है इसमें भूमिका तथा प्रथम,द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थ अध्याय में बताए गए विषयों का सार प्रस्तुत किया गया है।

विषय सूची

1. व्याकरण सिद्धान्तसुधानिधि में अंगाधिकार का स्वरूप 2. प्रातिपदिक से सम्बद्ध अंगकार्य 3. धातु से सम्बद्ध अगंकार्य 4. इट् से सम्बद्ध अंगकार्य। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

04. कृष्ण राम
वैयाकरणभूषणसार के स्फोटनिर्णय पर शाङ्करी टीका का समीक्षात्मक अध्ययन ।
निर्देशिका : डॉ. रेखा अरोड़ा
Th 24105

विषय सूची

1. व्याकरण दर्शन का उद्भव और विकास 2. कौण्डभट्ट से पूर्व स्फोट परम्परा 3.शाङ्करी टीका सममत वर्ण-पद एवं वाक्य स्फोट विचार 4. अखण्ड पदवाक्य स्फोट एवं जातिस्फोट विमर्श। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

05. खत्री (प्रोमिला)
धर्मशास्त्रीय उपभोक्ता संरक्षण विधि एवं आधुनिक उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम का तुलनात्मक अध्ययन।
निर्देशिका : डॉ. मीना कुमारी
Th 24104

सारांश
(असत्यापित)

प्रकृत शोधग्रन्थ में उपभोक्ता सम्बद्ध प्राचीन विधियों एवं आधुनिक उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। शोधग्रन्थ के प्रथम भाग में धर्मशास्त्रीय विधियों का विश्लेषण किया गया है। इस भाग में छह अध्याय है। प्रथम अध्याय में विक्रेता कृत विभिन्न प्रकार की अनुचित क्रियाओं से सम्बद्ध विधियों का विवेचन किया गया है। दूसरे अध्याय में विक्रीयासम्प्रदान अर्थात् विक्रीत वस्तु की आपूर्ति न करने से सम्बद्ध विधियों का स्पष्ट किया गया है। तृतीयाध्याय मूल्य व्यवस्था से सम्बद्ध है। प्राचीन विधियाँ मूल्य व्यवस्था में क्रेता को किस प्रकार संरक्षित करती हैयह बताया गया हैए चतुर्थ अध्याय अनुशयसे सम्बद्ध है। अनुशय के रूप में वस्तु प्रतिनिवृत्ति का अधिकार देकर क्रेता को प्रत्यक्षतः संरक्षित किया गया है। पञ्चम अध्याय में ृआधिश सम्बद्ध विधियों का विवेचन किया गया है। जिसमें आधि-रक्षण एवं आधि मोचन सम्बद्ध विधियाँ ऋणी को प्रत्यक्षतः संरक्षित करती है। षष्ठ अध्याय में सेवाक्षेत्र से सम्बद्ध विधियाँ बतायी गयी हैं। इन विधियों में सेवाप्रदाता रजकतन्तुवायशिल्पकार एवं भिषकों के कार्य करने के ढंगउनका वेतन आदि निश्चित किया गया है। इनके द्वारा दी गई सेवा में कमी पाए जाने पर उन्हें दण्डित भी किया गया है।

शोध ग्रन्थ के द्‌वितीय भाग में आधुनिक उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम के प्रावधानों का विश्लेषण किया गया है। आधुनिक परिवादों का भी अध्ययन किया गया है। अन्त में प्राचीन एवं आधुनिक विधियों में साम्य एवं वैषम्य के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

विषय सूची

1. प्रथम भाग : धर्मशास्त्रीय विधियाँ 1. अनुचित क्रियाओं से संरक्षण 2. विक्रीयासम्प्रदान में संरक्षण 3. मूल्य व्यवस्था में संरक्षण 4. अनुशय के रूप में संरक्षण 5. आधि में संरक्षण 6. सेवा क्षेत्र में संरक्षण 2. द्वितीय भाग : आधुनिक उपसंरक्षण अधिनियम 3. तृतीय भाग : परिवाद अध्ययन। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

06. गुप्ता (सीमा)
गोस्वामी हरिकृष्णशास्त्री विरचित आचार्यविजय का समीक्षात्मक अध्ययन ।
निर्देशक : डॉ. विजय गर्ग
Th 24109

विषय सूची

1. भूमिका 2. आचार्यविजय की कथावस्तु 3. आचार्यविजय के पात्रों का चरित्र-चित्रण 4. आचार्यविजय का काव्य-सौन्दर्य 5. आचार्यविजय में समाज एवं संस्कृति 6. आचार्यविजय काव्य में दर्शन 7. आचार्यविजय में प्रवर्तित रामानन्दाचार्य की शिक्षाएँ। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची। परिशिष्ट।

07. भूपेन्द्र कुमार
सनाद्यन्त क्रियापदों का सङ्गणकीय अनुप्रयोग, अभिज्ञान एवं विश्लेषण।
निर्देशक : डॉ. सुभाष चन्द
Th 24099

सारांश
(सत्यापित)

अष्टाध्यायीमें सुबन्त तथा तिङन्त दोनों प्रकार के शब्दों की निर्माण प्रक्रिया को दर्शायागया है । तिङन्तों के मूलज्ञान के लिए पाणिनि ने धातुपाठ का उपदेश किया है, जिसमें लगभाग 2000 मूलधातुओं का उपदेश प्राप्त होता है । धातुसंज्ञा विधायक दोसूत्र है- भूवादयो धातवः एवं सनाद्यन्ता धातवः हैं । मूलधातुपाठ में उपदिष्टधातुओं से जब कालक्रमानुसार लकार आते हैं तो वह प्राथमिक क्रियारूप कहलाते हैंयथा- पठ्+तिप् =पठति, हसति, भवति आदि, तथा जब उन्हीं मूलधातुओं तथा सुबन्तों सेबारह प्रत्यय (सन्, यङ्, णिच्, णिङ्, ईयङ्, आय, यक्, क्यच्, काम्यच्, क्यष्, क्यङ्, तथा क्विप्) लगते हैं तो गौणक्रियारूपों का निर्माण होता है यथा- पठितुम्इच्छति= पठ्+सन्= पिपठिष । इन्ही धातुओं को सनादि धातु कहा जाता है ।इनसेपुनः वाच्य एवं काल के अनुसार लकारार्थ को द्‌योतित करने हेतु क्रियारूप बनते हैं। प्रस्तुत शोध में इन्ही प्रकार की धातुओं से निष्पन्न क्रियारूपों का ऑनलाइनविश्लेषण हेतु एक संगणकीय

सिस्टम का विकास किया गया है ।जिसके माध्यमसे सनाद्यन्त क्रियारूपों की पहचान करते हुए विश्लेषण कियाजा सकता है।यह सिस्टम संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालयकी वेबसाइट http://cl.sanskrit.du.ac.in पर ई-शिक्षण टूल्स (E-Learning Tools) के अन्तर्गत उपलब्ध है। इससे मूलधातु या शब्द कीजानकारी के साथ-साथ प्रत्यय, लकार, पुरुष तथा वचन की सम्पूर्ण जानकारी प्रदर्शितहोती है । यह सिस्टम छात्रों एवं संस्कृत जिज्ञासुओं के लिये बहुत ही उपयोगीसिस्टम है ।शोधप्रबन्ध कुल पाँच अध्यायों में विभक्त है- संस्कृत व्याकरणपरम्परा एवं क्रियापद, संस्कृत सनाद्यन्तों का परिचय एवं शोधसर्वेक्षण, संस्कृतसनाद्यन्तों की रूपसिद्धिप्रक्रिया, सनाद्यन्त पहचान एवं विश्लेषण हेतु संगणकीयनियम तथा वेब आधारित सनाद्यन्तक्रियापदों का अभिज्ञान एवं विश्लेषण सिस्टम ।

विषय सूची

1. संस्कृत व्याकरण परम्परा एवं क्रियापद 2. संस्कृत सनाद्यन्तों का परिचय एवं शोध सर्वेक्षण 3. संस्कृत सनाद्यन्तों की रूपसिद्धि प्रक्रिया 4. सनाद्यन्त पहचान एवं विश्लेषण हेतु संगणकीय नियम 5. वेब आधारित सनाद्यन्त क्रियापदों का अभिज्ञान एवं विश्लेषण सिस्टम का परिचय। निष्कर्ष एवं भावी अनुसंधान संभावनाएँ। सन्दर्भ ग्रंथ सूची। परिशिष्ट। प्रकाशन सूची।

08. मिश्र (जगनारायण)
संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के लक्ष्यों की प्राप्ति में भारतीय दार्शनिक-चिन्तन की भूमिका।
निर्देशक : डॉ. दया शंकर तिवारी एवं प्रो. रेखा सक्सेना
Th 24103

सारांश
(सत्यापित)

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में इन्हीं सन्दर्भों पर विचार-विमर्श किया गया है। प्रस्तुत प्रबन्ध में छः अध्याय हैं, जिनमें पर्यावरण और पारिस्थितिकी पर आधुनिक दृष्टि से शोध-कार्य सम्पन्न किया गया है। प्रथम अध्याय पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी तंत्र से सम्बन्धित है, जिसमें पर्यावरण परिभाषा, पारिस्थितिकी परिभाषा, पारिस्थितिकी तन्त्र, पारिस्थितिकी तन्त्र के प्रकार, पर्यावरण एवं परितन्त्र उसके प्रमुख घटक, परिमण्डल, पर्यावरणीय समस्याएँ, भारत में पर्यावरण संरक्षण के कानून, एतत् सम्बन्धी नवीन प्रौद्योगिकी तथा पर्यावरण संरक्षण संबन्धित राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं पर विचार-विमर्श किया गया है। द्वितीय अध्याय 'संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम' गठन, लक्ष्य एवं प्रमुख कार्य से सम्बद्ध है, जिसमें राष्ट्र संघ, गठन, उद्देश्य, उसके प्रमुख संगठन एवं संस्थाएँ तथा संस्थाओं के द्वारा पर्यावरण संरक्षण और सम्वर्धन हेतु किये गये विभिन्न प्रमुख कार्यों एवं सरकारी-समझौतों और सम्मेलनों पर चर्चा की गयी हैं। तृतीय अध्याय वेद मूलक चिन्तन की भूमिका पर आधारित है, जिसमें वैदिक साहित्य में पर्यावरण और पारिस्थितिकी से सम्बन्धित विभिन्न वैदिक सन्दर्भों को उपस्थापित किया गया

है। चतुर्थ अध्याय पुराणमूलक चिन्तन के रूप में पर्यावरण और पारिस्थितिकी पर ही आधारित है, जिसमें पौराणिक साहित्य के सन्दर्भों की उपस्थापना के साथ विचार विमर्श किया गया है। पंचम अध्याय आस्तिक-दार्शनिक चिन्तन की भूमिका के रूप में अभिगृहीत है, जिसमें भारतीय दार्शनिक चिन्तन परम्परा के महत्त्वपूर्ण दार्शनिकों की विचार-सारणी को प्रस्तुत करते हुए विचार-विमर्श किया गया है। अन्तिम षष्ठ अध्याय भारतीय नास्तिक-दार्शनिक चिन्तकों की पर्यावरण और पारिस्थितिकी से सम्बन्धित अवधाराणाओं को सप्रमाण प्रस्तुत करते हुए विचार-विमर्श किया गया हैं। इस प्रकार प्रस्तुत प्रबन्ध के समग्र अध्यायों में शोध-दृष्ट्या प्रामाणिक साक्ष्यों के साथ 'संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम' के लक्ष्यों की प्राप्ति में भारतीय दार्शनिक-चिन्तनों पर अध्ययन एवं अनुसन्धान किया गया है।

विषय सूची

1. पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी तंत्र 2. संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम, गठन, लक्ष्य एवं प्रमुख कार्य 3. वेद मूलक चिन्तन की भूमिका 4. पुराणमूलक चिन्तन की भूमिका 5. आस्तिक दार्शनिक चिन्तन की भूमिका 6. नास्तिक दार्शनिक चिन्तन की भूमिका। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

09. मिश्र (रमानन्द)
पाणिनीयप्रक्रियाग्रन्थानां किमावल्याः समीक्षणम् : व्याकरणस्य इतिहासस्य समाजभाषाविज्ञानस्य च सन्दर्भे ।
निर्देशक : डॉ. चन्द्रभूण झा
Th 24101

सारांश
(सत्यापित)

भूमिकोपसंहारसंवलितोऽयं शोधप्रबन्धः पंचसु अध्यायेषु निबद्धः। अध्यायानां विभागः शोधविषयं लक्ष्यीकृत्य कृतः। व्याकरणस्य इतिहासस्य, समाजभाषाविज्ञानस्य च सन्दर्भे किमावल्याः समीक्षणं कर्तव्यम् अतः व्याकरण- इतिहास-समाजभाषाविज्ञानदृष्ट्या अध्यायस्य विभागः कृतः। तेषु पंचसु अध्यायेषु प्रारम्भिक्याम् अध्यायत्रय्यां किमावल्याः व्याकरणदृष्ट्या, चतुर्थेऽध्याये इतिहासस्य सन्दर्भे, पंचमेऽध्याये च समाजभाषाविज्ञानस्य सन्दर्भे विवेचनं कृतम्। तत्र प्रथमेऽध्याये प्रक्रियाग्रन्थानां सन्धि-सुबन्त-स्त्री-प्रत्ययप्रकरणानां सूत्राणां वात्तिकानांच किमावल्याः विवेचनं कृतम्। एतस्मिन् अध्याये 48 सूत्राणां 4 वात्तिकानां च प्रत्युदाहरणानां समीक्षणं विहितम्। द्वितीयाध्याये कारक-समास-तद्धितप्रकरणानां सूत्राणां वात्तिकानांच समीक्षणं कृतम्। अस्मिन्नध्याये विवेचितानां सूत्राणां संख्या 59 वात्तिकानांच 2 इति। प्रथमाध्यायवद् अयमप्यध्यायः प्रत्युदाहरणानां व्याकरणस्य सन्दर्भे समीक्षणं करोति। तृतीयाध्याये प्रक्रियाग्रन्थानां तिङन्त-कृदन्त-वैदिकप्रक्रियाप्रकरणानां सूत्राणां प्रत्युदाहरणानां

विवेचनं कृतम्। एतेषां प्रकरणनां 53 सूत्राणां 1 वात्त्रिकस्य च प्रत्युदाहरणानि विवेचितानि। अत्राध्यायेषु विभिन्नेषु सूत्रेषु प्रक्रियाग्रन्थकाराणां मतवैभिन्न्यं विवेचितम्। यथा प्रथमाध्याये अकः सवर्णे दीर्घ इति सूत्रे अनुवृत्तस्य अचीति पदस्य प्रत्युदाहरणे सिद्धान्तकौमुद्याः 'कुमारी शेते' इत्यस्य प्रक्रियासर्वस्वस्य च 'गङ्गाह्रद' इत्यस्य आकार-हकारयोः ईकार-शकारयोश्च सावण्र्यविधिनिषेधविवेचनं विशदीकृतम्। द्वितीयाध्याये उपपदमतिङ् इत्यत्र प्रत्युदाहरणानां विवेचनक्रमे प्रक्रियाकौमुदीसिद्धान्तकौमुद्योः मतवैभिन्न्यस्य विवेचनं कृतम्। धर्मादनिच्केवलात् इति सूत्रे 'केवलम्' इति पदमाश्रित्य प्रयुक्ते प्रत्युदाहरणे प्रक्रियाग्रन्थानां मतवैभिन्न्यं स्पष्टीकृतम्। केवलं समस्तपदे कथं सम्भवतीति विशदीकृतम्। चतुर्थाध्याये किमावल्याः इतिहासस्य सन्दर्भे समीक्षणं सम्पादितम्। यद्यपि प्रत्युदाहरणेषु ऐतिहासिकतथ्यानाम् अन्वेषणं महत्कठिनम्, तेषां शब्दशास्त्रीयनियममात्रबोधपरकत्वात् तथापि प्रत्युदाहरणेषु यथोपलब्धैतिहासिकतथ्यानाम् अन्वेषणं कृत्वा तद्विवेचनं शोधप्रबन्धस्यास्य प्रकृताध्याये कृतम्। प्रत्युदाहरणानां ऐतिहासिकदृष्ट्या सर्वाधिकं महत्वम् इदम् यत् भारतीयेतिहासे कालक्रमेण विकसितस्य भक्ति-आन्दोलनस्य भक्तिकालस्य वा प्रभावः प्रत्युदाहरणेषु स्पष्टं प्रतीयते। रूपावतारम् आरभ्य सिद्धान्तकौमुदीं, प्रक्रियासर्वस्वं वा यावत् यथा भक्तिपरकप्रत्युदाहरणानां प्रयोगबाहुल्यं वर्धमानं दृश्यते तेन तेषु तदान्दोलनस्य प्रभावः इति निश्चितमेव। अथ च उभयोः कालिकदृष्ट्या अध्ययनेनापि एतत्सिद्ध्यति। प्रबन्धस्यास्य पंचमाध्याये प्रत्युदाहरणानां समाजभाषाविज्ञानस्य सन्दर्भे समीक्षणं विहितम्। ऐतिहासिकतत्त्ववद् एव न्यूनतयोपलब्धस्य समाजभाषावैज्ञानिकतथ्यस्य यथामति विवेचनम् एतस्मिन्नध्याये सम्पादितम्। भाषाया सम्बन्धं समाजेन, संस्कृत्या प्रयोक्त्रा च सह संस्थाप्य यथा तस्याः अध्ययनं, विवेचनं च क्रियते सा दृष्टिः भाषायाः समाजभाषावैज्ञानिकी दृष्टिः। अथवा 'भाषया विज्ञानम्=बोधः भाषाविज्ञानम्, समाजस्य भाषाविज्ञानम् समाजभाषा-विज्ञानम्' भाषामाध्यमेन समाजस्य ज्ञानं बोध इत्यर्थः। प्रत्युदाहरणेषु वर्णव्यवस्था, आश्रमव्यवस्था, नारीस्थितिः, समाजे ईश्वरोपासना, विविधखाद्यवस्तूनाम् उल्लेखः, पशूनामुल्लेखः, आजीविकोल्लेखः, कृषिकार्योल्लेखः, ग्रामीण-नागरिकजीवनोल्लेखः, मनोरंजन-साधनोल्लेखः इत्यादयः विविधः विषयाः वर्णिताः संकेतिताश्च यैः प्रत्युदाहरणानां समाजभाषावैज्ञानिकम् अध्ययन सम्पादितम्।

विषय सूची

1. किमावल्याः व्याकरणस्य सन्दर्भे समीक्षणम् 2. किमावल्याः व्याकरणस्य सन्दर्भे समीक्षणम्3. किमावल्याः व्याकरणस्य सन्दर्भे समीक्षणम् 4. किमावल्याः इतिहासस्य सन्दर्भे समीक्षणम् 5. किमावल्याः समाजभाषाविज्ञानस्य सन्दर्भे समीक्षणम् उपसंहृतिः । सन्दर्भग्रंथसूची।

10. योगेश कुमार

यतीन्द्रविमल चौधुरी के जीवनचरितात्मक रूपकों में प्रतिबिम्बित समाज।

निर्देशक : डॉ. दया शंकर तिवारी

Th 24217

सारांश

(असत्यापित)

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में 8 अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में जीवनचरितात्मक रूपकों की प्राचीन, मध्यकालीन एवं आधुनिक परम्परा को प्रदर्शित करने का प्रयास किया गया है, इसके दूसरे भाग में यतीन्द्रविमल चौधुरी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को प्रदर्शित किया गया है। दूसरे अध्याय में साहित्य के सामजिक अध्ययन का सैद्धांतिक विश्लेषण किया गया जिसमें समाज एवं साहित्य के अन्योन्याश्रय सम्बन्ध दर्शाया दर्शाया गया है। तृतीय अध्याय में यतीन्द्रविमल चौधुरी के जीवनचरितात्मक रूपकों में सामाजिक संघटन को प्रस्तुत किया गया है जिसमें जाति व्यवस्था के विभिन्न आयाम दृष्टिगत होते है। पुनः समाज में प्राप्त होने वाले लाभप्राप्त वर्ग, वंचित वर्ग एवं संतोष की स्थिति वाले वर्गों के आधार पर इस संघटन को दर्शाया गया है। चतुर्थ अध्याय यतीन्द्र के रूपकों में प्राप्त होने वाले सभ्यता के विभिन्न आयामों को दर्शाता है। पंचम अध्याय समीक्ष्य रूपकों में धर्म एवं विचारों का परिपोषण करता है, जिसमें धर्म में धार्मिक आचार, विचार, पर्व एवं प्रथाएं, तथा धर्मस्थल का उल्लेख किया गया है। विचारों के अन्तर्गत वैष्णवमूलक, लोकनायकमूलक, स्त्रीमूलक एवं सामान्य विचारों का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में यतीन्द्र के रूपकों में आर्थिक जीवन जिसमें कृषि,पशुपालन एवं व्यवसाय को दर्शाया गया है। व्यवसाय के अन्तर्गत जातिगत, कर्मगत एवं अन्य व्यवसायों को स्थान दिया गया है। सप्तम अध्याय में राजनीतिक जीवन, जिसमें शासन व्यवस्था के राजतन्त्रात्मक, सामन्तवादी एवं औपनिवेशिक स्वरुप को दर्शाया गया है, तथा नागरिक एवं कर व्यवस्था का भी उल्लेख प्राप्त होता है। आठवां अध्याय नारी की स्थिति, जिसके अन्तर्गत नारी का पुरुष के साथ एवं नारी का नारी के साथ सम्बन्ध के आधार पर नारी की सम्माननीय सामान्य एवं निम्न स्थिति को प्रस्तुत किया गया है। इसी अध्याय में स्त्री-स्वभाव, स्त्री-शिक्षा एवं समाज को स्त्रियों की देन का उल्लेख किया गया है। अंत में उपसंहार प्रस्तुत करते हुए समाज को सन्देश देने का प्रयास किया गया है।

विषय सूची

1. विषय-प्रवेश 2. साहित्य के सामाजिक अध्ययन का सैद्धांतिक विश्लेषण 3. यतीन्द्रविमल चौधुरी के जीवनचरितात्मक रूपकों में प्रतिबिम्बित सामाजिक संघटन 4. यतीन्द्रविमल चौधुरी के जीवनचरितात्मक रूपकों में प्रतिबिम्बित सभ्यता 5. यतीन्द्रविमल चौधुरी के जीवनचरितात्मक रूपकों में प्रतिबिम्बित धर्म 6. यतीन्द्रविमल चौधुरी के जीवनचरितात्मक रूपकों में प्रतिबिम्बित आर्थिक जीवन 7. यतीन्द्रविमल चौधुरी के जीवनचरितात्मक रूपकों में प्रतिबिम्बित राजनीतिक जीवन 8. यतीन्द्रविमल चौधुरी के जीवनचरितात्मक रूपकों में प्रतिबिम्बित नारी। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

11. वेदवर्द्धन

बौद्धदर्शन में शब्दार्थ-विमर्श : दिङ्नाग एवं शान्तरक्षित के संदर्भ में।

निर्देशक : डॉ. पंकज कुमार मिश्र

Th 24106

विषय सूची

1. विषयप्रवेश 2. शान्तरक्षित के तत्त्वसंग्रह में शब्दब्रह्मपरीक्षा (शान्तरक्षित द्वारा वैयाकरणों के शब्दाब्रह्मवाद की समीक्षा) 3. शान्तरक्षित के तत्त्वसंग्रह मे शब्दार्थपरीक्षा (नैयायिक, मीमांसक तथा अन्य मतों के भाषादार्शनिक सिद्धान्तों की उपस्थापना एवं समीक्षा) 4. शान्तरक्षित के तत्त्वसंग्रह मे शब्दार्थपरीक्षा (पूर्वपक्ष की उपस्थापना– भाहम, कुमारिल भट्ट तथा उद्द्योतकर (काव्यशास्त्रीय, मीमांसक तथा नैयायिक) के अपोहखण्डन विषयक मतों की उपस्थापना) 5. शान्तरक्षित के तत्त्वसंग्रह मे शब्दार्थपरीक्षा (उत्तरपक्ष की उपस्थापना– भाहम, कुमारिल भट्ट तथा उद्द्योतकर के मतों तथा अपोहखण्डन विषयक आक्षेपों का बौद्धों द्वारा खण्डन) उपसंहार। परिशिष्ट। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

12. शिव कुमार

आरण्यकों में प्रतिबिम्बित समाज एवं आधुनिक परिप्रेक्ष्य ।

निर्देशिका : प्रो. शारदा शर्मा

Th 24102

सारांश

(असत्यापित)

वैदिक वाङ्मय में आरण्यकों का नाम अत्यन्त गौरवपूर्ण है। इसमें समाज परक गतिविधियों का बहुत ही सारगर्भित वर्णन उपलब्ध होता है जिसके अन्तर्गत सुप्रसिद्ध आख्यान एवं उपाख्यान हैं। प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध पाँच अध्यायों में विभक्त है।प्रथम अध्याय- 'आरण्यक ग्रन्थों का परिचयात्मक ऐतिहासिक अवलोकन' इस अध्याय में आरण्यकों की महत्ता को बताते हुए उसके उद्‌भव एवं विकास का वर्णन किया गया है तदनन्तर ऋग्वेद, यजुर्वेद एवं सामवेद से सम्बन्धित आरण्यकों की चर्चा की गई है।द्‌वितीय अध्याय- 'आरण्यकों में प्रतिपादित वर्णाश्रम व्यवस्था' प्रस्तुत अध्याय के अन्तर्गत वर्णाश्रम व्यवस्था की सामाजिकता को बताते हुए स्त्रियों के सामाजिक एवं धार्मिक अधिकारों का वर्णन किया गया है। तृतीय अध्याय- 'आरण्यकों में अध्यात्मतत्त्व विवेचन' इस अध्याय में बुद्‌धि, मन, आत्मा एवं शरीर से सम्बद्‌ध कार्यों की चर्चा करते हुए कर्मकाण्ड यज्ञपरक व्यवस्था एवं प्राणविद्‌या का महत्त्व बताते हुए नैतिकता की चर्चा की गई है।चतुर्थ अध्याय- 'आरण्यकों में आर्थिक, राजनैतिक एवं शैक्षणिक व्यवस्था' के माध्यम से तत्युगीन समाज का अवलोकन किया गया है।पंचम अध्याय- 'आरण्यकों में सामाजिक तत्त्वों की वर्त्तमान परिप्रेक्ष्य में उपादेयता' इस अध्याय के अन्तर्गत समाज के अपरिहार्य तत्त्वों की चर्चा की गई है जिसमें धर्म की व्यापकता को बताते हुए मन्थकर्म पंचमहायज्ञ की व्यवस्था

का वर्णन किया गया है और इसके साथ-साथ सामाजिक दार्शनिक विचारों के द्वारा ब्रहम को पृथ्वी अन्तरिक्ष और द्युलोक में व्यापक महाशक्ति के रूप में बताया गया है। तत्पश्चात् निष्काम कर्म की तथ्यपरक अवधारणा पर विचार किया गया है जिसमें "तेन त्यक्तेन भुंजीथाः" की भावना द्योतित है। तदनन्तर यज्ञकर्म करने की सार्वभौमिकता को बताते हुए कहा गया है कि यह जो यज्ञ है यह सम्पूर्ण मानव मात्र के कल्याण के लिए सार्वभौमिक है। इस प्रकार समाज का आधुनिक दृष्टिकोण से वर्णनात्मक प्रयास किया गया है।

विषय सूची

1. आरण्यक ग्रन्थें का परिचयात्मक ऐतिहासिक अवलोकन 2. आरण्यकों मे प्रतिपादित वर्णाश्रम व्यवस्था 3. आरण्याकों में अध्यात्मतत्त्व विवेचन 4. आरण्याकों में आर्थिक, राजनैतिक एवं शैक्षणिक व्यवस्था 5. आरण्याकों में सामाजिक तत्त्वों की वर्त्तमान परिप्रेक्ष्य में उपादेयता। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

13. साक्षी
यान्त्रिक अनुवाद के लिए तद्धितान्त पदों की पहचान एवं विश्लेषण।
निर्देशक : डॉ. सुभाष चन्द
Th 24100

सारांश
(सत्यापित)

पाणिनीयव्याकरण में तद्धित विधायक सूत्र तथा वार्तिक भी अन्यों की अपेक्षा अधिक प्राप्त होते हैं। संस्कृत भाषा की महत्ता अल्प शब्दों में विशाल अर्थ को ज्ञापित करने की सामर्थ्य के कारण सर्वविदित है। यदि तद्धित प्रत्ययों के विषय में यह तथ्य देखा जाए तो अक्षरशः सत्य प्रतीत होता है । यथा- दशरथ का पुत्र कहने के लिए केवल दाशरथि पद पर्याप्त है। अतः यह संस्कृतभाषा की अपनी एक विशेष शैली है। अष्टाध्यायी के चतुर्थ अध्याय के प्रथम पाद के तद्धिताः सूत्र से तद्धित का अधिकार प्रारम्भ होकर पञ्चम अध्याय के समाप्ति पर्यन्त जाता है। तद्धित विषयक ज्ञान हेतु अनेक पारम्परिक ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं । संगणकीय भाषाविज्ञान के क्षेत्र में इस प्रकार की कोई पुस्तक या शोधकार्य प्राप्त नहीं होता जो एक ही स्थान पर तद्धितप्रत्यय, उनके विधायक सूत्र, उनके द्वारा सिद्ध होने वाले शब्द तथा प्रकरणगत वार्तिकों की चर्चा करता हो। पाठकगणों को ये सारी सूचना एक साथ ही प्राप्त हो जाये ऐसा प्रयास प्रस्तुत शोधकार्य में किया गया है। इन तद्धितान्त पदों की सही पहचान करना एवं उसका सही विश्लेषण करना मानव के लिये कठिन कार्य होता है । अतः इस शोध मे माध्यम से एक ऐसे ऑनलाइन सिस्टम का विकास किया गया है। जिसके माध्यम से तद्धितान्त पदों का विश्लेषण ऑनलाइन एवं किसी भी समय आसानी से किया जा सकता है।

जिसके माध्यम से तद्धित शब्द में प्रातिपदिक, प्रत्यय, अर्थ, सूत्रादि की जानकारी प्राप्त होती है। सिस्टम का विवरण संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय कीबसाइट http://cl.sanskrit.du.ac.in पर ई-शिक्षण टूल्स (E-Learning Tools) के अन्तर्गत उपलब्ध है।प्रस्तुत शोधप्रबन्ध को कुल पाँच अध्यायों में विभक्त किया गया है- संस्कृत व्याकरणशास्त्र एवं पदविज्ञान, संस्कृत तद्धितान्तों का परिचय एवं शोध सर्वेक्षण, संस्कृत तद्धितान्तों की रूपसिद्धि प्रक्रिया नामक, तद्धितान्त पहचान एवं विश्लेषण के संगणकीय नियम एवं वेब आधारित तद्धितान्त पदों की पहचान एवं विश्लेषण सिस्टम का परिचय।

विषय सूची

1. संस्कृत व्याकरणशास्त्र एवं पदविज्ञान 2. संस्कृत तद्धितान्तों का परिचय एवं शोध सर्वेक्षण 3. संस्कृत तद्धितान्तों की रूपसिद्धि प्रक्रिया 4. तद्धितान्त पदों की पहचान एवं विश्लेषण हेतु संगण्कीय नियम 5. वेब आधारित तद्धितान्त पदों की अभिज्ञान एवं विश्लेषण सिस्टम। निष्कर्ष एवं भावी अनुसंधान संभावनाएँ। सन्दर्भ ग्रंथ सूची। परिशिष्ट। प्रकाशन सूची।

14. सिंह (उमेश्वर प्रभात)
आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी के काव्यशास्त्रीय सिद्धान्तों का समीक्षात्मक अध्ययन।
निर्देशक : प्रो. गिरीश चन्द्र पन्त
<u>Th 24108</u>

सारांश
(सत्यापित)

आचार्य राधवल्लभ त्रिपाठी के काव्यशास्त्ाीय सिद्धान्तों का समीक्षात्मक अध्ययन' के प्रथम अध्याय अर्थात् 'आचार्य राधवल्लभ त्रिपाठीः व्यक्तित्व-कर्तृत्व' में आचार्य राधवल्लभ त्रिपाठी के विषय में विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय अर्थात् 'अर्वाचीन काव्यशास्त्ाीय आचार्यों का काव्यात्म निरूपण के अंतर्गत प्रमुख अर्वाचीन आचार्यों के द्वारा प्रतिपादित काव्य तत्वों पर विचार किया गया है। तृतीय अध्याय अर्थात् 'आचार्य राधवल्लभ त्रिपाठी द्वारा प्रतिपादित काव्यात्म निरूपण' के अंतर्गत आचार्य राधवल्लभ त्रिपाठी के अलंकार विषयक मत उपस्थापन का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय अर्थात् 'काव्य स्वरूप निरूपण' के अंतर्गत आचार्य राधवल्लभ त्रिपाठी द्वारा प्रतिपादित-काव्य लक्षण निरूपण, काव्य प्रयोजन निरूपण, काव्य हेतु निरूपण, शब्दार्थ का संबंध एवं साहित्य पद विवेचन और शब्द-वृत्ति निरूपण का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय अर्थात् 'काव्य-भेद निरूपण' में कतिपय पारम्परिक आचार्यों को अभिमत काव्य भेद, कुछ प्रमुख अर्वाचीन काव्यशास्त्ाीय आचार्यों द्वारा प्रतिपादित काव्य भेद तथा आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी द्वारा प्रतिपादित काव्य-भेद निरूपण पर विचार किया गया

षष्ठ अध्याय अर्थात् रीति एवं वृत्ति-स्वरूप विवेचन एवं समीक्षा प्रमुख प्राचीन आचार्यों द्वारा प्रतिपादित रीति-विषयक अवधारणाएं, अर्वाचीन आर्चायों को अभिमत रीतितत्व विषयक अवधारणाएं तथा आचार्य राधवल्लभ त्रिपाठी को अभिमत रीतितत्व विषयक अवधरणा पर विचार किया गया है। सप्तम अध्याय अर्थात् 'अलंकारों के आभ्यन्तर एवं बाहृयवर्ग' के अन्तर्गत प्राचीन आचार्यों द्वारा किया गया अलघड्ढार विभाग, अर्वाचीन काव्यशास्त्राीय आचार्यों द्वारा किये गये अलघड्ढार विभाग तथा आचार्य राधवल्लभ त्रिपाठी द्वारा किया गया अलघड्ढार विभाग के अन्तर्गत सर्वप्रथम आचार्य राधवल्लभ त्रिपाठी द्वारा किये गये अलंकारों के द्विविध् विभाजन अर्थात् आभ्यन्तर एवं बाहृयवर्ग पर विचार-विमर्श किया गया है। अष्टम अध्याय अर्थात् 'अर्वाचीन काव्यशास्त्र को राधवल्लभ त्रिपाठी का प्रदेय' के अन्तर्गत आचार्य राधवल्लभ त्रिपाठी द्वारा संस्कृत काव्यशास्त्र को दिये गये उनके योगदान पर विचार किया गया है।

विषय सूची

1. आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी : व्यक्तित्व-कर्तृत्व 2. अर्वाचीन काव्यशास्त्रीय आचार्यों का काव्यात्म निरूपण 3.आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी द्वारा प्रतिपादित काव्यात्म निरूपण 4. काव्य स्वरूप निरूपण 5. काव्य-भेद निरूपण 6. रीति एवं वृति-स्वरूप विवेचन एवं समीक्षा 7. अलंकारों के आभ्यन्तर एवं बाह्म वर्ग 8. अर्वाचीन काव्यशास्त्र को आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी प्रदेय। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।